११. दुख

(पूरक पठन)

– *यशपाल*

जिसे मनुष्य अपना समझ भरोसा करता है जब उसी से अपमान और तिरस्कार प्राप्त हो तो मन वितृष्णा से भर जाता है, एकदम मर जाने की इच्छा होने लगती है, उसे शब्दों में बता सकना संभव नहीं ।

दिलीप ने अपनी पत्नी हेमा को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी । वह उसका बहुत आदर करता था, बहुत आंतरिकता से वह उसके प्रति अनुरक्त था । बहुत से लोग इसे 'अति' कहेंगे । इसपर भी वह हेमा को संतुष्ट न कर सका । जब हेमा, केवल दिलीप के मित्र के साथ सिनेमा देख आने के कारण रात भर रूठी रहकर सुबह उठते ही माँ के घर चली गई तब दिलीप के मन में क्षोभ का अंत न रहा ।

सितंबर का अंतिम सप्ताह था । दिलीप बैठक की खिड़की और दरवाजों पर परदा डाले बैठा था । वितृष्णा और ग्लानि में, समय स्वयं यातना बन जाता है । एक मिनट गुजारना मुश्किल हो जाता है । उसी समय सीढ़ियों पर से छोटे भाई के धम-धम कर उतरते चले आने का शब्द सुनाई दिया ।

छोटे भाई ने परदे को हटाकर पूछा था, ''भाई जी, आपको कहीं जाना न हो तो मैं मोटरसाइकिल ले जाऊँ?''

इस विघ्न से शीघ्र छुटकारा पाने के लिए दिलीप ने हाथ के इशारे से उसे इजाजत दे, आँखें बंद कर लीं ।

दीवार पर टँगी घड़ी ने कमरे को गुँजाते हुए छह बज जाने की सूचना दी । दिलीप ने सोचा- 'क्या, वह यों ही कैद में पड़ा रहेगा ?' उठकर खिड़की का परदा हटाकर देखा, बारिश थम गई थी । अब उसे दूसरा भय हुआ कि कोई आ बैठेगा और अप्रिय चर्चा चला देगा ।

वह उठा । भाई की साइकिल ले, गली के कीचड़ से बचता हुआ और उससे अधिक लोगों की निगाहों से छिपता हुआ वह मोरी दरवाजे से बाहर निकल मिंटो पार्क जा पहुँचा । उस लंबे-चौड़े पार्क में पानी से भरी घास पर पछवाँ के तेज झोंकों में ठिठुरने के लिए उस समय भला कौन आता ?

उस एकांत में एक बेंच के सहारे साइकिल खड़ी कर वह बैठ गया । सिर से टोपी उतारकर बेंच पर रख दी । सिर में ठंडक लगने से मस्तिष्क की व्याकुलता कुछ कम हुई ।

विचार आया, यदि ठंड लग जाने से वह बीमार हो जाए, उसकी हालत खराब हो जाए तो वह चुपचाप शहीद की तरह अपने दुख को

परिचय

जन्म : १९०३, फिरोजपुर (पंजाब)
मृत्यु : १९७६
परिचय : यशपाल जी ने अपने लेखन की शुरुआत कहानियों से की । बाद में प्रमुख विधा के रूप में उपन्यास लेखन को अपनाया । आपकी रचनाओं में समाज के शोषित, उत्पीड़ित तथा सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षरत व्यक्तियों के प्रति गहरी आत्मीयता दिखाई देती है । आपकी रचनाएँ धार्मिक आडंबर और समाज की झूठी नैतिकताओं पर करारी चोट करती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पिंजड़े की उड़ान', 'फूलों का कुर्ता', 'सच बोलने की भूल' (कहानी संग्रह), 'दिव्या', 'झूठा-सच', 'मनुष्य के रूप', 'देशद्रोही' (उपन्यास) 'चक्कर क्लब' (व्यंग्य संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

मनुष्य अपने जीवन में आए दुखों को सबसे बड़ा समझता है, लेकिन उससे भी अधिक दुखी जन समाज में निरुपाय जीते रहते हैं । इन्हें देख वह अपना दुख भूलकर अपने आपको सुखी मानता है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने दूसरों के दुख के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए हमदर्दी दिखाई है । आपका मानना है कि दूसरों के सुख में सुखी होना और उनके दुःख में दुःखी होना भी मानव धर्म है । छोटी बात को समस्या मानकर रोते रहना उचित नहीं है ।

अकेला ही सहेगा । 'किसी को' अपने दुख का भाग लेने के लिए नहीं बुलाएगा । जो उसपर विश्वास नहीं कर सकता, उसे क्या अधिकार है कि उसके दुख का भाग बँटाने आए ? एक दिन मृत्यु दबे पाँव आएगी और उसके रोग के कारण, हृदय की व्यथा और रोग को ले, उसके सिर पर सांत्वना का हाथ फेर, उसे शांत कर चली जाएगी । उस दिन जो लोग रोने बैठेंगे, उनमें हेमा भी होगी । उस दिन उसे खोकर हेमा अपने नुकसान का अंदाजा कर, अपने व्यवहार के लिए पछताएगी । यही बदला होगा दिलीप के चुपचाप दुख सहते जाने का । निश्चय कर उसने संतोष का एक दीर्घ निःश्वास लिया । करवट बदल ठंडी हवा खाने के लिए वह बैठ गया ।

स्वयं सहे अन्याय के प्रतिकार की एक ही संभावना देख उसका मन कुछ हलका हो गया था। वह लौटने के लिए उठा । शरीर में शैथिल्य की मात्रा बाकी रहने के कारण साइकिल पर न चढ़ वह पैदल भाटी दरवाजे पहुँचा । मार्ग में शायद ही कोई व्यक्ति दिखाई दिया हो । सड़क किनारे स्तब्ध खड़े बिजली के लैंप निष्काम और निर्विकार भाव से अपना प्रकाश सड़क पर डाल रहे थे । सौर जगत के ये अद्‌भुत नमूने थे । प्रत्येक पतंगा एक ग्रह की भाँति अपने मार्ग पर चक्कर काट रहा था। कोई छोटा, कोई बड़ा दायरा बना रहा था । कोई दायें को, कोई बायें को, कोई आगे को, कोई विपरीत गति में, निरंतर चक्कर काटते चले जा रहे थे । कोई किसी से टकराता नहीं । वृक्षों के भीगे पत्ते बिजली के प्रकाश में चमचमा रहे थे ।

कुछ कदम आगे बढ़ने पर सड़क के किनारे नीम के वृक्षों की छाया में कोई श्वेत-सी चीज दिखाई दी । कुछ और बढ़ने पर मालूम हुआ, कोई छोटा-सा लड़का सफेद कुरता-पायजामा पहने, एक थाली सामने रखे कुछ बेच रहा है ।

बचपन में गली-मुहल्ले के लड़कों के साथ उसने अकसर खोमचेवाले से सौदा खरीदकर खाया था । अब वह इन बातों को भूल चुका था परंतु इस सरदी में सुनसान सड़क पर, जहाँ कोई आने-जाने वाला नहीं, यह खोमचेवाला कैसे बैठा है?

खोमचेवाले के छोटे शरीर और आयु ने भी उसका ध्यान आकर्षित किया । उसने देखा, रात में सौदा बेचने निकलने वाले सौदागर के पास मिट्‌टी के तेल की ढिबरी तक नहीं । समीप आकर उसने देखा, वह लड़का सर्द हवाओं में सिकुड़कर बैठा था । दिलीप के समीप आने पर उसने आशा की एक निगाह उसकी ओर डाली और फिर आँखें झुका लीं ।

दिलीप ने और ध्यान से देखा। लड़के के मुख पर खोमचा बेचने वालों की-सी चतुरता न थी, बल्कि उसकी जगह थी एक कातरता। उसकी थाली भी खोमचे का थाल न होकर घरेलू व्यवहार की एक मामूली

यू ट्‌यूब पर गुलजार की कविताएँ सुनिए तथा सुनाइए ।

मुरादाबादी थाली थी । तराजू भी न था । थाली में कागज के आठ टुकड़ों पर पकौड़ों की बराबर-बराबर ढेरियाँ लगाकर रख दी गई थीं ।

दिलीप ने सोचा, इस ठंडी रात में हम ही दो व्यक्ति बाहर हैं । वह उसके पास जाकर ठिठक गया । मनुष्य-मनुष्य में कितना भेद होता है, परंतु मनुष्यत्व एक चीज है, जो कभी-कभी भेद की सब दीवारों को लाँघ जाती है । दिलीप को समीप खड़े होते देख लड़के ने कहा-

''एक-एक पैसे में एक-एक ढेरी ।''

एक क्षण चुप रह दिलीप ने पूछा, ''सबके कितने पैसे ?''

बच्चे ने उँगली से ढेरियों को गिनकर जवाब दिया, ''आठ पैसे ।''

दिलीप ने केवल बात बढ़ाने के लिए पूछा, ''बालक, कुछ कम नहीं लेगा ?''

सौदा बिक जाने की आशा से जो प्रफुल्लता बालक के चेहरे पर आ गई थी, वह दिलीप के इस प्रश्न से उड़ गई। उसने उत्तर दिया, ''माँ बिगड़ेगी ।''

इस उत्तर से दिलीप द्रवित हो गया और बोला, ''क्या पैसा माँ को देगा ?'' बच्चे ने हामी भरी ।

दिलीप ने कहा, ''अच्छा, सब दे दो !''

लड़के की व्यस्तता देख दिलीप ने अपना रूमाल निकालकर दे दिया और पकौड़े उसमें बँधवा दिए ।

आठ पैसे का खोमचा बेचने जो इस सरदी में निकला है; उसके घर की क्या अवस्था होगी ?

यह सोचकर दिलीप सिहर उठा । उसने जेब से एक रुपया निकालकर लड़के की थाली में डाल दिया । रुपये की खनखनाहट से सुनसान रात गूँज उठी । रुपये को देख लड़के ने कहा, ''मेरे पास तो छुट्टे पैसे नहीं हैं ?''

दिलीप ने पूछा, ''तुम्हारा घर कहाँ है ?''

''पास ही गली में है,'' लड़के ने जवाब दिया ।

दिलीप के मन में उसका घर देखने का कौतूहल जाग उठा । बोला, ''चलो, मुझे भी उधर से ही जाना है । रास्ते में तुम्हारे घर से पैसे ले लूँगा ।''

बच्चे ने घबराकर कहा, ''पैसे तो घर में भी न होंगे ।''

दिलीप सुनकर सिहर उठा, परंतु उत्तर दिया, ''होंगे, तुम चलो ।''

लड़का खाली थाली को छाती से चिपटाकर आगे-आगे चला और उसके पीछे साइकिल को थामे दिलीप ।

दिलीप ने पूछा, ''तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''पिता जी मर गए हैं ।''

संभाषणीय

किसी खोमचेवाले से उसकी दिनचर्या जानने के लिए बातचीत कीजिए ।

दिलीप चुप हो गया । कुछ और दूर जा उसने पूछा, ''तुम्हारी माँ क्या करती हैं ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''माँ एक बाबू के यहाँ चौका-बरतन करती थी, अब बाबू ने हटा दिया ।''

दिलीप ने पूछा, ''क्यों हटा दिया बाबू ने ?''

लड़के ने जवाब दिया, ''माँ अढ़ाई रुपये महीना लेती थी, जगतू की माँ ने बाबू से कहा कि वह दो रुपये में सब काम कर देगी । इसलिए बाबू की घरवाली ने माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया ।''

दिलीप फिर चुप हो गया । लड़का नंगे पैर गली के कीचड़ में छप-छप करता चला जा रहा था । दिलीप को कीचड़ से बचकर चलने में असुविधा हो रही थी । लड़के की चाल की गति को कम करने के लिए दिलीप ने फिर प्रश्न किया, ''तुम्हें जाड़ा नहीं मालूम होता ?''

लड़के ने शरीर को गरम करने के लिए चाल और तेज करते हुए उत्तर दिया, ''नहीं ।''

गली के मुख पर कमेटी की बिजली का लैंप जल रहा था । ऊपर की मंजिल की खिड़कियों से भी गली में कुछ प्रकाश पड़ रहा था । उससे गली का कीचड़ चमककर किसी तरह मार्ग दिखाई दे रहा था ।

सँकरी गली में एक बड़ी खिड़की के आकार का दरवाजा खुला था । उसका धुँधला लाल-सा प्रकाश सामने पुरानी ईंटों की दीवार पर पड़ रहा था, इसी दरवाजे में लड़का चला गया ।

दिलीप ने झाँककर देखा, मुश्किल से आदमी के कद की ऊँचाई की कोठरी में-जैसी प्रायः शहरों में ईंधन रखने के लिए बनी रहती है-धुँआ उगलती मिट्टी के तेल की एक ढिबरी अपना धुँधला लाल प्रकाश फैला रही थी । एक छोटी चारपाई, जैसी कि श्राद्ध में दान दी जाती है, काली दीवार के सहारे खड़ी थी । उसके पाये से एक-दो मैले कपड़े लटक रहे थे । एक क्षीणकाय, आधी उमर की स्त्री मैली-सी धोती से शरीर लपेटे बैठी थी ।

बेटे को देख स्त्री ने पूछा, ''सौदा बिका बेटा ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''हाँ माँ'' और रुपया माँ के हाथ में देकर कहा, ''बाकी पैसे बाबू जी को देने हैं ।''

रुपया हाथ में ले माँ ने विस्मय से पूछा, ''कौन बाबू बेटा ?''

बच्चे ने उत्साह से कहा, ''साइकिलवाले बाबू ने सब सौदा लिया है । उनके पास छुट्टे पैसे नहीं थे । बाबू गली में खड़े हैं ।''

घबराकर माँ बोली, ''रुपये के पैसे कहाँ से मिलेंगे बेटा ?'' सिर के कपड़े को सँभाल दिलीप को सुनाने के अभिप्राय से माँ ने कहा, ''बेटा रुपया बाबू जी को लौटाकर घर का पता पूछ ले, पैसे कल ले आना ।''

यशपाल लिखित 'दुख का अधिकार' कहानी पढ़कर साभिनय प्रस्तुत कीजिए ।

लड़का रुपया ले दिलीप को लौटाने आया । दिलीप ने ऊँचे स्वर से, ताकि माँ सुन ले, कहा, ''रहने दो, कोई परवाह नहीं, फिर आ जाएगा ।''

सिर के कपड़े को आगे खींच स्त्री ने कहा, ''नहीं जी, आप रुपया लेते जाइए, बच्चा पैसे कल ले आएगा ।''

दिलीप ने शरमाते हुए कहा, ''रहने दीजिए । यह पैसे मेरी तरफ से बच्चे को मिठाई खाने के लिए रहने दीजिए ।''

स्त्री ''नहीं-नहीं'' करती रह गई । दिलीप अँधेरे में पीछे सरक गया ।

स्त्री के मुरझाए, कुम्हलाए पीले चेहरे पर कृतज्ञता और प्रसन्नता की झलक छा गई । रुपया अपनी धोती की खूँट में बाँध, एक ईंट पर रखे पीतल के लोटे से पानी ले उसने हाथ धो लिए और एक मैले अँगोछे से लिपटी रोटी निकाल, बेटे के हाथ धुला, उसे खाने को दे दी ।

बेटा तुरंत की कमाई से पुलकित हो रहा था । मुँह बनाकर कहा, ''ऊँ-ऊँ, फिर रूखी रोटी ।''

माँ ने पुचकारकर कहा, ''नमक डाला हुआ है बेटा ।''

बच्चे ने रोटी जमीन पर डाल दी और ऐंठ गया, ''सुबह भी रूखी रोटी, रोज-रोज रूखी ।''

हाथ आँखों पर रख बच्चा मुँह फैलाकर रोना ही चाहता था कि माँ ने उसे गोद में खींच लिया और कहा, ''मेरा राजा बेटा, सुबह जरूर दाल खिलाऊँगी । देख, बाबू तेरे लिए रुपया दे गए हैं । शाबास !''

''सुबह मैं तुझे खूब सौदा बना दूँगी । फिर तू रोज दाल खाना ।''

बेटा रीझ गया। उसने पूछा, 'माँ, तूने रोटी खा ली ?'

खाली अँगोछे को तहाते हुए माँ ने उत्तर दिया, ''हाँ बेटा ! अब मुझे भूख नहीं है, तू खा ले ।''

भूखी माँ का बेटा बचपने के कारण रूठा था परंतु माँ की बात के बावजूद घर की हालत से परिचित था । उसने अनिच्छा से एक रोटी माँ की ओर बढ़ाकर कहा, 'एक रोटी तू खा ले ।'

माँ ने स्नेह से पुचकारकर कहा, ''बेटा, मैंने सुबह देर से खाई थी, मुझे अभी भूख नहीं, तू खा !''

दिलीप के लिए और देख सकना संभव न था । दाँतों से ओंठ दबा वह पीछे हट गया ।

मकान पर आकर वह बैठा ही था कि नौकर ने आ दो भद्र पुरुषों के नाम बताकर कहा, ''आए थे, चले गए ।'' खाना तैयार होने की सूचना दी । दिलीप ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा, ''भूख नहीं है ।'' उसी समय उसे लड़के की माँ का 'भूख नहीं' कहना याद आ गया ।

नौकर ने विनीत स्वर में पूछा, ''थोड़ा दूध ले आऊँ ?''

पुस्तकालय में आने वाली नवीनतम किसी पत्रिका की पसंदीदा कहानी को संवाद रूप में लिखकर भित्ति फलक पर लगाइए ।

दिलीप को गुस्सा आ गया। उसने गुस्से से कहा, ''क्यों, भूख न हो तो दूध पिया जाता है?... दूध ऐसी फालतू चीज है।''

नौकर कुछ न समझ विस्मित खड़ा रहा ।

दिलीप ने खीझकर कहा, ''जाओ !''

मिट्टी के तेल की ढिबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उसकी आँखों के सामने से हटना नहीं चाहता था ।

छोटे भाई ने आकर कहा, ''भाभी ने पत्र भेजा है'' और लिफाफा दिलीप की ओर बढ़ा दिया ।

दिलीप ने पत्र खोला। पत्र की पहली लाइन में लिखा था–

''मैं इस जीवन में दुख ही देखने के लिए पैदा हुई हूँ....''

दिलीप ने आगे न पढ़, पत्र फाड़कर फेंक दिया । उसके माथे पर बल पड़ गए । झोंपड़ी के दृश्य आँखों के सामने नाच उठे । उसके मुँह से निकला–

''काश ! तुम जानती, दुख किसे कहते हैं ?...''

—— o ——

शब्द संसार

अनुरक्त वि.(सं.) = जिसके मन में अनुराग उत्पन्न हुआ हो

प्रफुल्लता स्त्री.सं.(सं.) = प्रसन्नता

अँगोछा पुं.सं.(हिं.) = शरीर पोंछने का कपड़ा, गमछा

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

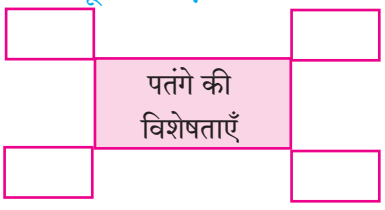

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

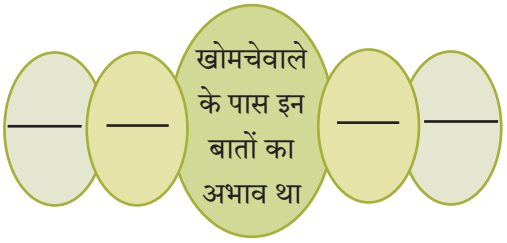

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

१. मिंटो पार्क

२. चतुरता

३. कृतज्ञता और प्रसन्नता

४. व्यस्त और रोचकता

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

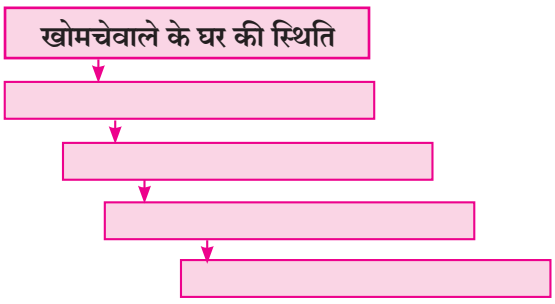

(५) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
१. धुँधला लाल	_____	१. अँगोछा
२. खोमचेवाला	_____	२. खनखनाहट
३. मुरादाबादी	_____	३. प्रकाश
४. रुपये	_____	४. सौदा
५. माँ	_____	५. चौका-बर्तन
६. मैली-सी	_____	६. थाली
		७. धोती

(६) कारण लिखिए :

१. मनुष्य का मन अनासक्त हो जाता है ----------
२. दिलीप साइकिल पर बिना बैठे चलने लगा ----------
३. बच्चे ने अनिच्छा से रोटी माँ की ओर बढ़ाई ----------
४. दिलीप खोमचेवाले के साथ उसके घर गया ----------

(७) सही घटनाक्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. बेटा तुरंत की कमाई से पुलकित हो रहा था। ----------
२. उसने जेब से एक रुपया निकालकर लड़के की थाली में डाल दिया। ----------
३. एक मिनट गुजारना मुश्किल हो जाता है। ----------
४. व्याकुलता कुछ कम हुई। ----------

(८) उचित शब्द चुनकर लिखिए :

१. गली के मुख पर कमेटी की बिजली का ---------- जल रहा था। (दीया, दीपक, लैंप)
२. रुपया हाथ में ले माँ ने ---------- से पूछा। (दिलीप, बच्चे, विस्मय)
३. रहने दो कोई ---------- नहीं फिर आ जाएगा। (चिंता, परवाह, कोई बात नहीं)
४. उसने ---------- खोमचेवाले से सौदा खरीद कर खाया था। (अक्सर, हमेशा,नित्य)

(९) आकृति में दिए गए शब्दों का वर्गीकरण निर्देशानुसार कीजिए :

सड़क, खोमचा, ढिबरी, थालियाँ, चर्चा, व्यक्ति, पैसे, साइकिलें

एकवचन	बहुवचन
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

अभिव्यक्ति

'गरीबी उन्नति में बाधा नहीं बनती', विषय पर अपने विचार लिखिए।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित दोनों परिच्छेद पढ़कर प्रत्येक पर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

परिच्छेद – १

भारतीय वायु सेना की एक प्रशिक्षणार्थी डॉ. कु. गीता घोष ने उस दिन यह छलाँग लगाकर भारतीय महिलाओं की प्रगति के इतिहास में एक पन्ना और जोड़ दिया था डॉ. घोष पहली भारतीय महिला हैं, जिन्होंने वायुयान से छतरी द्वारा उतरने का साहसिक अभियान किया था ।

छतरी से उतरने का प्रशिक्षण पूरा करने के लिए हर छाताधारी को सात बार छतरी से उतरना पड़ता है । इनमें से पहली कूद तो रोमांचित होती ही है, वह कूद और भी रोमांचक होती है, जब उसे रात के अँधेरे में कहीं जंगल में अकेले उतरना होता है । डॉ. गीता न पहली कूद में घबराईं, न अन्य कूदों में और इसी प्रकार सातों कूदें उन्होंने सफलतापूर्वक पूरी कर लीं । प्रशिक्षण के दौरान उनका यह कथन कि 'मैं चाहती हूँ, जल्दी ये कूदें खत्म हों और मैं पूर्ण सफल छाताधारी बन जाऊँ', उनकी उमंग तथा उत्साह को प्रकट करता है । डॉ. गीता के अनुसार, उनकी डॉक्टरी शिक्षा भी इसी साहसी अभियान में काम आई । फिर लगन और नए क्षेत्र में प्रवेश का उत्साह हो तो कौन-सा काम कठिन रह जाता है । प्रशिक्षण से पूर्व तो उन्हें और भी कठिन परीक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ा था ।

प्रश्न : १. _____

२. _____

३. _____

४. _____

५. _____

परिच्छेद – २

भगिनी निवेदिता एक विदेशी महिला थीं, किंतु उन्होंने इस देश के नवोत्थान और भारतीय राष्ट्रीयता के विकास के लिए बहुत कुछ किया । जीवन के संबंध में उनका दृष्टिकोण बड़ा ही उदार था, समूचे संसार को वे एक ऐसी अविभाजनशील इकाई मानती थीं जिसका हर पहलू एक-दूसरे से संश्लिष्ट और अन्योन्याश्रयी है । लंदन में एक दिन स्वामी विवेकानंद के श्रीमुख से उनकी वक्तृता सुनकर इनमें अकस्मात परिवर्तन हुआ । २८ वर्षीय मिस मार्गरेट नोबुल, जो आयरिश थी, स्वामी जी की वाणी से इतनी अभिभूत हो उठीं कि भगिनी निवेदिता के रूप में उनका शिष्यत्व ग्रहण कर वह अपनी संवेदना, हृदय में उभरती असंख्य भाव-लहरियों को बाँध न सकी और भारत के साथ उनका घनिष्ठ रागात्मक संबंध कायम हो गया ।

ऐसा लगता था जैसे वह भारत की मिट्टी से उपजी हों या स्वर्ग दुहिता-सी अपने प्रकाश से यहाँ के अंधकार को दूर करने आई हों । ज्यों ही वे इधर आईं देशव्यापी पुनर्जागरण के साथ-साथ शिक्षा, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में उन्हें क्रांतिकारी परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव हुई ।

प्रश्न : १. _____

२. _____

३. _____

४. _____

५. _____

7JFHD2